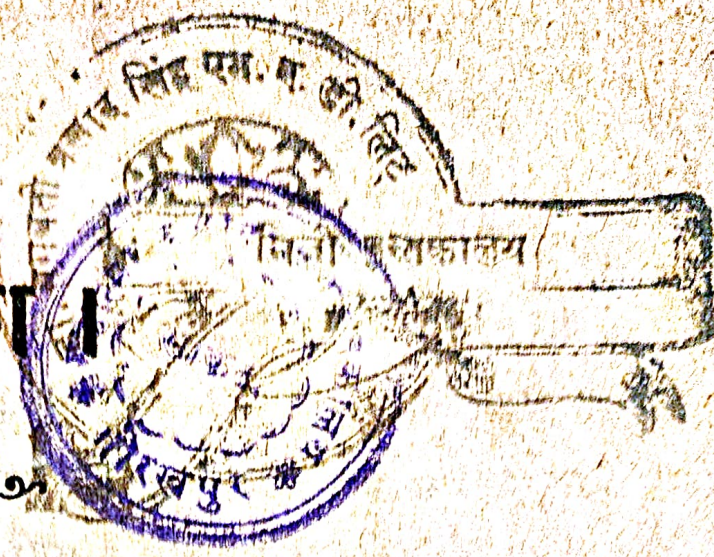

भूमिका।

प्रिय पाठक भाइयो इस प्रेमलता बारावरी के बाद इसी ग्रन्थ में विश्वविलास बीसिका है, जब सुभ सम्वत् १९६७ के साल में प्रथमही प्रथम श्री १०८ श्रीग्रन्थकर्त्ता जू महाराज साहब ने श्रीराम नगर की लीला देखने को पधारे, औ क्षीरसागर के किनारे रात्री के समय निवास किया, सवेरे नित्य कृत्य से निवटि श्री सियाराम नाम उच्चारण करते रहे, बुर्ज के ऊपर, तो देखते क्या हैं, कि बहुत से मलाह लोग, बंशी-कटिया-जाल इत्यादि मछली मारने के सामान लेकर आय, क्षीरसागर से मछली मारने लगे, अकस्मात उन लोगों के फन्दे में बड़ी बड़ी मछलियां फँसगईं, तो श्रीमहाराज जी, उन मछलियों के ऊपर दयालु होकर, नाम रटन छोड़ दिये, और मलाहों से बोले, कि बचा-इन मछलियों को मत मारो, छोड़दो, उन लोगों ने कहा, महात्माजी, आप भजन करिये, हम लोगों का यही काम है छोड़दें तो हमारे लड़के बच्चे का पालन पोषन को करेगा-भगवान के तर्फ से हम लोगों को यही रोजगार मिला है-ये बचन सुनि आपको अत्यन्त खेद भया, और संकल्प कर चुके कि यहां की लीला देखना उचित नहीं, चलो मिथिलाजी चलें, ऐसा

निश्चय करते रात्री हो आई सब लोग सोगये आपको भी तंद्रा आने लगी–इतने में कोई पुरुष उच्चस्वर से दिव्यज्ञान वैराज्ञ भक्ति रस सानी वाणी आपके श्रवण समीपही सुनाने लगे, कोई पांच मिनट के बाद आप चैतन्य होकर चन्द्रमा के उजाले में ही शीसविंशिल से मंजु छन्द में उस सम्पूर्ण वाणी को लिख लिये और उसका नाम विश्वविलाश वीसिका रक्खा। उसी साल से आप नेम करके हरसाल लीला अवलोकन करने श्री राम नगरमें जाया करते हैं, और जय सियराम जय जय सियराम नाम की ध्वनि झांझ ढोलक बजाय गाय प्रमी सज्जन समाज के सहित सुनाय हरषाया करते हैं, श्री लीला विहारी धनुधारी श्रीजनक कुमारी जू के सहित आपके दिव्य झांकी अवलोकि मन्द मन्द मुसुकाय सुख पाया करते हैं, और नित नव चरित दिखाया करते हैं--जो कि मन बानी ते अकथ है।

आपका—

सिया रघुनाथ शरण,

संकट मोचन बनारस।

* अथ श्री प्रेमलता बाराखरी *

श्रीसतगुरवे नमः

छन्द मञ्जु ।

क- का कलियुग सम न आन युग जेहि महँ नाम अधारा है ।
कर्म धर्म जप योग सोग प्रद वेद पुराण पुकारा है ॥
करत कठिन अति निरस विचारत केवल मोह पसारा है ।
कपट कलेवर प्रेमलता सब तजि भजु नाम उदारा है ॥ १ ॥

ख- खबर करो वादिन को मोह जाल क्या भूले हौ ।
खरा खरी करि कौल उदर में प्रभु सन कहा कबूले हौ ॥
खलक झलक लखि फँसे आइ इत सहते नाना शूले हौ ।
खट खटका तजि प्रेमलता अब होउ राम अनुकूले हौ ॥२॥

ग- गा गर्व गुमान न कीजे जीवन जग में थोरा है ।
गम खाना गहि चाल गरीबी मन मतङ्ग बरजोरा है ॥
गहु गुण दोष त्यागि रहु प्रमुदित करु जनि तोरा मोरा है ।
गई बहुत बय प्रेमलता अब भजु सियराम किशोरा है ॥३॥

घ-घ्घा घने गरीब निवाजे ताजे विरद विराजे हैं।
घट घट व्यापि रहे प्रभु सोई लखत सन्त कोउ बाजे हैं॥
घर घर घूमत जीव पीव बिनु जाने दुख सुख साजे हैं।
घन ज्यों पालत विश्व विश्वम्भर प्रेमलता अन्दाजे हैं॥४॥

न-न्ना नर्क स्वर्ग अपवर्गहिं त्यागि भजिय भगवाना हैं।
नवधा भक्ति साधु गुरु सेवा प्रभु पद पङ्कज ध्याना हैं॥
नवल नेह नित ठनो नाम सन छूटै आना जाना हैं।
नगद भजन व्योहार करै सोइ प्रेमलता नरदाना हैं॥ ५॥

च-चा चर्म देह यह मानुष सुर दुर्लभ श्रुति गाई है।
चतुर जीव अस जानि ठानि प्रण रटत नाम चितलाई है॥
चटक मटक सुख सदन नात जग बनिता बन्धु विहाई है।
चढ़े भजन पथ ललकि लिये प्रभु प्रेमलता अपनाई है॥ ६॥

छ छ्छा छल बल तजो भजोहरि लखि कलिकाल कराला है।
छके रहो सियराम नाम रँग पहिरि सुकंठी माला है॥
छवि निहारि प्रिय पल पल प्रभु की ऊर्द्ध पुंड दृ भाला है।
छन भंगू तनु प्रेमलता यह समझि न भूलो ख्याला है॥ ७॥

ज-ज्ञा जन्म सु जात भजन बिनु शिर धुनि पुनि पछताओगे।
जपो जानकी जान नाम नित बहुरि कि अस तनु पाओगे॥
जबते भये आजु लगि बागे कब निज हृदय धराओगे।
जग विलास बिनु तजे ईश मन प्रेमलता किमि भाओगे॥८॥

झ- झका झटपट करो तयारी आयू जात सिरानी है ।
झगरा जगत झमेल खेल तजि श्रवण सुनो गुरु बानी है ॥
झमकि चढ़ो सियराम भजन पथ क्षण क्षण होत सुहानी है ।
झरी झराझर लगै नामकी प्रेमलता मुददानी है ॥ ९ ॥

ञ- ञ्ना नमस्कार गुरु चरणनि जिन्हि दीन्यों उपदेशा है ।
नयो कोन तनु संसकार करि नाश्यो त्रिविधि कलेशा है ॥
नस नस औगुन भरे हरे सब भग्यो भजन आवेशा है ।
नत पालक करुणेश लखावत प्रेमलता अवधेशा है ॥ १० ॥

ट- ट्टा टपो कठिन भवसागर टोरि जगत ते नाता है ।
टरत न तोम दीप बातनि ते जारे बिनु न दिखाता है ॥
टपकत बूँद स्वाति की लखत न दादुर चातक पाता है ।
टर टर बोलत पर्‍यो कोचमें प्रेमलता हुलसाता है ॥ ११ ॥

ठ- ठ्ठा ठग बगरे सब जगमें भजन वित्त हर लेते हैं ।
ठसकोले ठेठर अग्यानी नाना विधि दुख देते हैं ॥
ठनत अनचही रारि बचे कोउ सन्त हारि जो चेते हैं ।
ठकुराई करि दम्भ दिखावत प्रेमलता खल जेते हैं ॥ १२ ॥

ड- ड्डा डरपत रहो फिरत जग काल व्याल मुख बाये हैं ।
डसै अचानक आइ प्रथम ज्यों मातु पितादिक खाये हैं ॥
डटै समर तेहि निकट कवन अस जीव चराचर जाये हैं ।
डके सन्तजन भागि तासु हद प्रेमलता प्रभु गाये हैं ॥ १३ ॥

ढ--ढ्ढा ढरो भजन पथ तजि जग जाल दुसह दुखदाई है।
ढब सीखहु सुचि सन्त सङ्ग रहि तरो नाम गुण गाई है॥
ढक्का खात यमन के बीते बहु दिन लाज न आई है।
ढचरा ढीला भया अबहुँ भजु प्रेमलता रघुराई है॥ १४॥

न--न्ना नई निकाई प्रभु की लखो त्यागि गृह कूपा है।
नभ समान सुचि अमल कमल सम कोमल श्याम स्वरूपा है॥
नटत न शरण जाय त्रिभुवन जो हरत घोर भव धूपा है।
नर्मद नराकार सीतावर प्रेमलता सुरभूपा है॥ १५॥

त--त्ता तन धन धाम वाम सुत सङ्ग न आते जाते हैं।
तजत सकल परिणाम नाम विनु जीव पीव विमुखाते हैं॥
तपत गयेउ पनतीनि भजन बिनु यदपि दुसह दुख पाते हैं।
तदपि न तजत मूढ़ ममता मद प्रेमलता पछिताते हैं॥ १६॥

थ--थ्था थर थर कँपो पापते जपो नाम सुखदाई है।
थपो हिये सियराम सु मूरति गुरु पद नेह लगाई है
थल बिलोकि पग धरो अवनि अनरीति करो जनि भाई है।
थमहुन करत सुकाज बयस लघु प्रेमलता कलिपाई है। १७॥

द--द्दा दर दर फ़िरत उदर लगि रटत न नाम सनेही है।
दया धर्म कर मूल मोक्ष प्रद जिन्हि दीनी यह देही है॥
दम दम पर करि याद सु प्रभु पद करै सु तनु जनु खेही है।
दश दिन को जिन्दगानी जगमें प्रेमलता लखु तेही है॥१८॥

ध— ध्या धन में भरे अमित अघ सुकृत एक सुखराशी है।
धर्म करै तजि लोभ कदाचित तौ पावै गति खासी है॥
धवल धाम रचि कै प्रभु मूरति पधरावै सु विलाशी है।
धरै ध्यान पद सेइ होइ दृढ़ प्रेमलता विश्वासी है॥ १९॥

न— न्ना नये नेह जनि जोरो मोरो मुख संसारी ते।
नदी नाव संयोग बिचारहु कहा लाभ अस यारी ते॥
नवो जानकी नाथ कमल पद बचे रहो पर नारी ते।
नकली नाते प्रेमलता तजि प्रीति करो धनुधारी ते॥ २०॥

प— प्पा परे बिषय के फन्दनि फिरि फिरि ज्ञान गमाया है।
पढ़े सुने नहिं गुने मोह बश आतम रूप भुलाया है॥
परम सुलभ सियराम नाम कलि वेद पुराणनि गाया है।
परिहरि सो सठ प्रेमलता शिर कर्म पहार उठाया है॥२१॥

फ— फ्फा फर्क भये बिनु जगते जोव न प्रभु पद पाते हैं।
फँसे नारि सुत देह गेह सुख चौराशी भरमाते हैं॥
फते चहत कलि कर्म कठिन करि उलटे बांधे जाते हैं।
फलहू कर फल रामनाम तेहि प्रेमलता नहिं गाते हैं॥२२॥

ब— ब्बा बन फल खाइ भजो हरि विषय भोग लखि फीके हैं।
बनिता सुत पितु मातु बन्धु हित ये सब गाहक जीके हैं॥
बनेबने के साथी जगमें बिगरे दाहक होके हैं।
बहुत कहौं का प्रेमलता भजु रामनाम कलि नोके हैं॥ २३॥

भ-भ्भा भर्म जाल जो भूले सहत सदा बहु शूले हैं।
भये भक्त भगवान शरण सो सन्त फिरैं जग फूले हैं॥
भजैं नाम तजि धाम काम नित सियवर पद अनुकूले हैं।
भला चहै जो प्रेमलता निज रटैं नाम सुख मूले हैं॥ २४॥

म-म्मा मनके विपुल मनोरथ होत न कबहूँ पूरे हैं।
मरत धाय जगजीव भजे विनु प्रभु पद पङ्कज रूरे हैं॥
मद मत्सर हठ कपट दम्भ छल हति जन किये अघूरे हैं।
महा मोह वश प्रेमलता परि लखत न राम हजूरे हैं॥२५॥

य-य्या यह संसार रच्यो जेहि तेहि प्रभु कर तू अंशा है।
यश चाहत सोइ विसरि भिल्यो इत आइ बकनि ज्योंहंसाहै॥
अज्ञ भयो तजि रूप सुनिज पर लग्यो बढ़ावन बंशा है।
यत्न करत सुत लागि मोह को प्रेलता सु प्रसंशा है॥ २६॥

र-र्रा रटो नाम निशिवासर दुसह विपत्ति निवारन है।
रथ घोड़ा गज धरणि धाम धन मोह मूल कछु सार न है॥
रसना पर सियराम नाम रस चाखो भव भव टारन है।
रहस अनूपम फुरत रटत जेहि प्रेमलता सु अपारन है॥२७॥

ल-ल्ला लखो मोहिनी मूरति सूरति को वलिहारी है।
लटपट हुए हजारनि आशक सुध बुध सकल बिसारी है॥
लछिमण लसैं दाहिने दिशिवर बामें जनक दुलारी है।
ललकि दिये गरबाहिं मुदित मन प्रेमलता पियप्यारी है॥२८॥

स- स्सा सर्व दुराग्रह परिहरि प्रीति करौ सुखराशी ते ।
सतगुरु शरण होइ भजु सादर मतलब जो गति खाशी ते ॥
सटे रहो सह भाव निरन्तर सियवर विश्व विलाशी ते ।
सत्य सनेह जानि प्रभु रीझत प्रेमलता विश्वासी ते ॥ २९ ॥

ह- हा हर्षि परो गुरु पांयँनि देह गेह जग सपना है ।
हरिहैं बिषम विषाद मंत्र दै कहिहैं कोइ न अपना है ॥
हम हमार तजि तात निरन्तर नाम काम प्रद जपना है ।
हठ परिहरि सोइ करै मुदित मन प्रेमलता जग तपना है ॥ ३० ॥

बाराखरी बिचार प्रवर्द्धक समुझहिं सन्त सुजाना हैं ।
पढ़ि हैं सुनहिं सुनाय सिखावहि हरिहैं पर अग्याना हैं ॥
रटहिं रटावहिं नाम परस्पर करहिं सु चरित बखाना हैं ।
प्रेमलतालखिकठिनकाल कलिप्रभुतजिकहुँन ठिकाना हैं॥ ३१ ॥
करिहैं सब अपराध क्षमा मम लखि आपन अनुगामी हैं ।
नामरटन वरदान कृपा करि दैहैं मोहि अभिरामी हैं ॥
जन्म जन्म सियलाल शरण रति गति मति रहै अकामी हैं ।
प्रेमलता बरबास सुमिथिला छोह करैं दोउ नामी हैं ॥ ३२ ॥

❀ दोहा ❀

बत्तिस छन्द प्रबन्ध करि, सतगुरु अर्पण कीन ।
बिवश रहत जिन्हिके सदा, सियबर परम प्रवीन ॥ १ ॥

सतगुरु कृपा कटाक्ष बिनु, सुख चाहहिं अग्यान।
प्रेमलता ते कूर मति, विवश मोह मद मान ॥ २ ॥

गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णु गुरु देव महेश्वरम्।
गुरु रेव परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः ॥ १ ॥
अग्यान तिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जन शलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ २ ॥

शुभम् ॥ १ ॥

इति श्री प्रेमलता बाराखरी जय सियराम जयजय सियराम नाम ध्वनि प्रचारक
परम हंस श्री १०८ श्री सियालाल शरण जी महाराज उपनाम
'श्री प्रेमलता' जू कृत समाप्त शुभम् ॥ १ ॥

जय सियराम जय जय सियराम।
जय सियराम जय जय सियराम ॥